International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 13-01-2021; Accepted: 14-02-2021; Published: 14-03-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 2; 2021; Page No. 24-25

अध्ययनरत छात्रों का आधुनिकीकरण के प्रति अध्ययन

डॉ. पूनम मदान[1], कल्पना गुप्ता[2]
[1] प्रधानाचार्या, डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल स्टडीज्, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, हिमालयन विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय समाज के सन्दर्भ में आधुनिकीकरण की आवधारणा विशेष महत्व की है। इसका कारण यह है कि सदियों से भारतीय समाज को एक परम्परावादी समाज के रुप में देखा जाता रहा है। 20वीं सदी के आरम्भ से भारतीय जीवन शैली तथा सामाजिक संस्थाओं में जब पश्चिमी समाज की विशेषताओं का समावेश होना आरम्भ हुआ, तब यहाँ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ी। दरअसल परम्परागत समाजों में होने वाले परिवर्तनों या औद्योगिकीकरण के कारण समाजों में आए परिवर्तनों को समझने तथा दोनों में भिन्नता प्रकट करने के लिए विद्वानों नें आधुनिकीकरण की अवधारणा को जन्म दिया। एक ओर उन्होंने परम्परागत समाज को रखा और दूसरी ओर आधुनिक समाज को। इस प्रकार उन्होंने परम्परा बनाम आधुनिकता को आधार बनाया। इसके साथ ही जब पाश्चात्य विद्वान उपनिवेशों एवं विकाशील देशों में होनें वाले परिवर्तनों की चर्चा करते है तो वे आधुनिकीकरण की अवधारणा का सहारा लेते है।

मूल शब्दः आवधारणा, उपनिवेशों, आधुनिकीकरण, अवधारणायें, परिदृश्य, वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण

प्रस्तावना
परम्परा और आधुनिकता पिछले कई दशकों से समाज विज्ञान विषयों में बहुचर्चित अवधारणायें रही है। परम्परा का सम्बन्ध भूतकाल से है। हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गये रीति रिवाजों, विश्वासों व कार्य करने के तरीके जो हमें विरासत में मिले है परम्परा के अन्तर्गत आते है। परम्परा किसी भी परिवर्तन के प्रति उदासीन होती है, साथ ही परिवर्तन में बाधक भी होती है। माइरन वीनर के अनुसार आधुनिकीकरण को संभव बनाने वाले प्रमुख साधन इस प्रकार है–

1. शिक्षा
2. संचार
3. राष्ट्रीयता पर आधारित विचारधारा
4. चमत्कारी नेतृत्व
5. अवपीड़क सरकारी सत्ता

आधुनिकीकरण विशेषतायें
समाजशास्त्रियों ने आधुनिकीकरण की विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख किया है डॉ0 प्रसाद के अनुसार आधुनिकीकरण की मुख्य तीन विशेषताएं है– नगरीकरण साक्षरता तथा सहभागिता।
लर्नर ने आधुनिकीकरण की सात विशेषताओं का उल्लेख किया है–

1. वैज्ञानिक भावना
2. संचार साधनों में क्रान्ति
3. नगरीकरण में वृद्धि
4. शिक्षा का प्रसार

महत्व
वर्तमान भारतीय समाजिक परिदृश्य में आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया चल रही है, उसके फलस्वरुप समाज एवं संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार परिवर्तन हो रहे है। इन सांस्कृतिक तत्वो में हो रहे परिवर्तनों को समझने व जानने के लिए इसका अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
वर्तमान युग विज्ञान की पराकाष्ठा का युग है, धर्म को विज्ञान की कसौटी पर कसा जा रहा है। धार्मिक मान्यताएं वैज्ञानिक तथ्यों के सामने क्षीण हो रही है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य हो या धार्मिक परिप्रेक्ष्य, सभी में वैज्ञानिक विचारों का समावेश होता जा रहा है, और इसके कारण सामाजिक एवं धार्मिक मान्यतायें बहुत तीव्र गति से बदल रही है।
अतः युवाओं की वर्तमान संदर्भ में क्या अभिवृति है, इसे जानने की आवश्यकता महसूस हुई।

उद्देश्य
आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण, और उदारीकरण की प्रक्रियाओं ने पहले से परिवर्तनशील भारतीय समाज को और भी अधिक गतिशील बना दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध में स्नातक छात्रोंको अध्ययन का केन्द्र बनाते हुये, आधुनिकीकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैः–

1. आधुनिकीकरण के प्रति स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आधुनिकीकरण के प्रति विभिन्न वर्गो के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आधुनिकीकरण के प्रति शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आधुनिकीकरण के प्रति संयुक्त और एकल परिवार के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिणाम
आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका संख्या 1

लिंग	आवृत्ति (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन $(S.D.)$	स्वातंत्र्य अंश (df)	$t-$ मान	सार्थकता
पुरुष	200	132.05	17.73	398	5.608	सार्थक है।
महिला	200	141.5	15.93			

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल पुरुष स्नातक विद्यार्थियों की संख्या 200 हैं। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्रांप्ताकों का मध्यमान 132.05 तथा मानक विचलन 17.73 है। इसी प्रकार कुल महिला स्नातक विद्यार्थियों की संख्या 200 है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्रांप्ताकों का मध्यमान 141.5 तथा मानक विचलन 15.93 है। पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों के बीच ज का आंकिक मान 398 स्वांतत्रय अंश पर 5.608 है जबकि ज का सारणीगत मान .01 स्तर पर 2.59 है।

यहाँ पर ज का आंकिक मान .01 स्तर पर ज के सारणीगत मान से अधिक हैं। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। इसका अर्थ यह हुआ की आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अलग–अलग है।

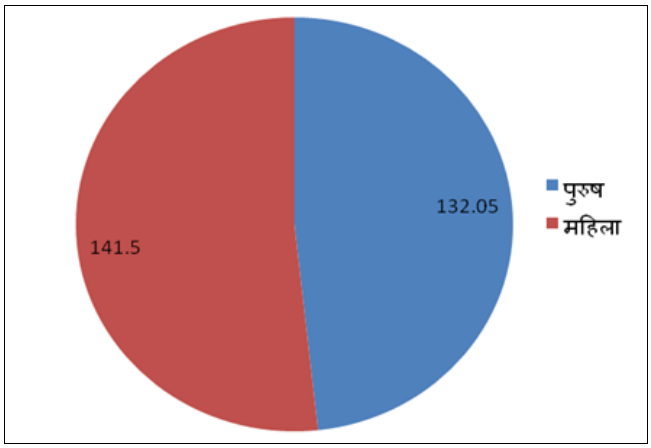

चित्र 1: परिकल्पना मध्यमान प्राप्तांक रेखाचित्र

आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

कुल पुरुष स्नातक विद्यार्थियों की संख्या 200 हैं। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्रांप्ताकों का मध्यमान 132.05 है। इसी प्रकार कुल महिला स्नातक विद्यार्थियों की संख्या 200 है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्रांप्ताकों का मध्यमान 141.5 है। पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों के बीच ज का आंकिक मान 398 स्वांतत्रय अंश पर 5.608 है जबकि ज का सारणीगत मान .01 स्तर पर 2.59 है।

सुझाव

समयाभाव परिस्थिति के कारण इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा कुछ वर्ग व तथ्य छूट गये है। अतः भावी अनुसंधानकर्ताओं को निम्न सुझाव दिये जा रहे है–

1. शोधकर्ताओं द्वारा आधुनिकीकरण के उपक्षेत्रों (सामाजिक–धार्मिक, विवाह, स्त्री की स्थिति की शिक्षा) के प्रति विवाहित एवं अविवाहित परास्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जा सकता है।
2. इस अध्ययन को केवल देहरादून शहर के स्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है, जबकि इसी प्रकार का अध्ययन अन्य प्रदेश, अन्य शहर एवं क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
3. यह अध्ययन स्नातक विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विषयों में पढ़ने वाले स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
4. आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति को दूसरे अन्य चरों के साथ मिलाकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Srinivas M.N., Social Change in Modern India, California Press, Los Angles, 1966, 50.
2. Srinivas MN. Ibid, 52
3. Weiner, Myron, Modernization: the dynamics of growth, Higgers bothoms Ltd. Madras, 1967, 33.
4. अंगिरा, के0के0, ए स्टडी ऑफ वैल्यूज इन रिलेशन टु लोकेलिटी एण्ड जेण्डर, इण्डियन साइक्लाजिकल रिव्यू, 44, 1995 पृ0 10–14
5. आर्मर, एस तथा आर यूटज, फार्मल एजूकेशन एण्ड इन्डिविजुअल माडर्निटी इन एन अफ्रीका सोसाइटी, अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलाजी, जनवरी 1971, पृ0 604–626
6. आहूजाराम, भारतीय समाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, 1995, पृ–378–379.
7. आहूजाराम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली 1995 पृष्ठ 365.